# परिवार की संरचना में परिवर्तन
## (Changes in Structure of family)

TDC-2nd (subsidiary)

विलियम जे० गुड ने लगभग पचास वर्षों तक अफ्रिका मध्य एशिया, चीन, भारत, जापान जैसे मुल्कों के परिवार का अध्ययन किया और अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि कृषि प्रधान समाज में परिवार एक आर्थिक इकाई के रूप में काम करता है। परिवार का स्वरूप साधारणतया संयुक्त एवं विस्तृत होता है। पुत्र अपने पिता के काम को विरासत के रूप में लेते हैं। स्त्री और पुरुषों के बीच श्रम का स्पष्ट बंटवारा होता है, लेकिन आज बदलती परिस्थिति में ऐसे परिवार में भी परिवर्तन हो रहा है। विस्तृत परिवार धीरे-धीरे दाम्पत्य परिवार में बदलता जा रहा है। विलियम जे० गुड ने परिवार में होने वाले परिवर्तनों के संबंध में बताया है कि विश्वस्तर पर परिवार अपने विस्तृत स्वरूप से दाम्पत्य परिवार व्यवस्था की ओर बढ़ा है, जिसके पाँच बिन्दु प्रमुख हैं:—

(1) विस्तृत परिवार, छोटे-छोटे कम होता जा रहा है।
(2) व्यवस्थित विवाह की कमी या प्रेम विवाह में वृद्धि।
(3) विवाह के आर्थिक महत्व में कमी हो रही है, लेकिन भारत इस बात का अपवाद है कि विकास के बावजूद यहाँ विवाह का आर्थिक महत्व बढ़ता जा रहा है इसलिए वधू-शुल्क और दहेज प्रथा में वृद्धि हो रही है।

④ संबंधियों के बीच विवाह की घटना में कमी हो रही है।

⑤ माता - पिता का बच्चों के ऊपर तथा पति का पत्नी के ऊपर प्रभुत्व एवं नियंत्रण में कमी हो रही है। स्त्री-पुरुष के बीच समानता धीरे - धीरे बढ़ती जा रही है।

विश्वस्तर पर परिवार में जो परिवर्तन हो रहा है उसे गिडेन्स ने निम्नलिखित ढंग से रखे हैं —

① साधारणतया युवक - युवतियाँ अपनी पसन्द से विवाह करना पसन्द करते हैं। लोग अब अपने पारंपरिक बंधन और मूल्यों में बँधे रहना पसन्द नहीं करते हैं।

② महिलाएँ अपने अधिकार के प्रति पहले से ज्यादा सजग होती जा रही है। पारिवारिक मामलों में जो निर्णय लिया जा रहे हैं उनमें उनकी हिस्सेदारी बढ़ती जा रही है।

③ बहुत से समाजों में यह व्यवस्था है कि लोगों को अपनी ही जाति या स्वजन समूह में विवाह करना है। ठीक इसके विपरीत कुछ समाजों में यह व्यवस्था है कि लोगों को अपनी जाति एवं स्वजन समूह के बाहर विवाह करता है।

④ कई विकासशील देशों में यौन - संबंधित विचारों में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई पड़ने लगता है लोगों के विचारों में विशेषकर शहरों में काफी रुझान आया है।

मुस्लिम समाजों में भी खुलापन आया है।
(5) यौन इच्छाओं की पूर्ती एक लम्बे समय में परिवार का एक मुख्य प्रकार्य रहा है। लेकिन आज पाश्चात्य देशों मे इसके लिए परिवार का स्थापित किया जाना कतई जरूरी नहीं है। बिना शादी-ब्याह के लोग साथ में रहते है और यौन इच्छाओं की पूर्ती स्वच्छन्द रूप से करते है। यहाँ तक कि प्रजनन का कार्य भी चलता रहता है।
(6) पाश्चात्य देशों में नए प्रकार के परिवार की उत्पत्ति हुई है। कुछ ऐसे ही परिवार पाए जाते है जो दो समलिंगी साथ रहते है, जिसे विलासी माता - पिता परिवार के नाम से जाना जाता है।

विश्व के अधिकांश समाज मे विस्तृत परिवार की प्रधानता है। आज उसकी मूल - परिवार स्पष्ट रूप से उभर रहा है, लेकिन फिलिपीन्स इस विश्वव्यापी प्रवृति का अपवाद है, जहा गावों की तुलना मे शहरों मे अधिक विस्तृत परिवार पाया जाता रहा है। उसी तरह पोलैंड मे भी विस्तृत परिवार की प्रवृति मे वृद्धि हुई है। जबकि साधारणतया उद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया से दाम्पत्य परिवार का विशेषकर विश्वस्तर पर बढ़ावा मिला है।